खेत की जुताई एवं साफ सफाई : गर्मी में खेतों की गहरी जुताई करने से इन कीटों की भूमि मे छुपे इलल्रियों के प्युपा अवस्था मे मर जाते है व पक्षियों द्वारा खा लिए जाते है बोनी से पहले खेतो से पुरानी फसल अवशेष खरपतवार निकाल कर नष्ट करे। व फसल की समय से बुआई करनी चाहिए ।

अंतर्वती फसल – चना फसल के साथ धनियों/सरसों एवं अलसी को हर 10 कतार चने के बाद 1–2 कतार लगाने से चने की इल्ली का प्रकोप कम होता है तथा ये फसलें मित्र कीड़ों को आकर्षित करती हैं। एवं ध्यान रखे चने के आसपास टमाटर एवं भिंडी की फसल लगाए जाये।

प्रपंची फसल– चना फसल के चारों ओर पीला गेन्दा फूल लगाने से चने की इल्ली का प्रकोप कम किया जा सकता है। प्रौढ़ मादा कीट पहले गेन्दा फूल पर अन्डे देती है।
अतः तोड़ने योग्य फूलों को समय–समय पर तोड़कर उपयोग करने से अण्डे एवं इल्लियों की संख्या कम करने में मदद् मिलती है।

कीटभक्षी चिडियों को संरक्षण – फलीभेदक एवं कटुआ कीट के नियंत्रण में कीटभक्षी चिडियों का महत्वपूर्ण योग दान है। इस इल्ली के परभक्षी पक्षियो जैसे काली मेना नील कंठ बगुला टिटहरी इत्यादि को आश्रय देने हेतु "टी" ("T") आकार की (3–4 फीट) ऊन्ची खूटियाँ 8–10 मीटर की दूरी पर प्रति हेक्टयर के हिसाब से 30–40 खूटियाँ लगाए। एवं ध्यान रहे दाना पकते समय इन खूटीयों को खेत से निकाल लेना चाहिए।

परजीवी व मित्र कीट – ट्राइकोग्रामा चिलोनिस अण्ड परजीवी के अंडे 1.5 लाख प्रति हेक्ट प्रति सप्ताह इल्लियों के दिखते ही फसल मे चार बार छोड़े इसके अलावा कुछ परभक्षी व परजीवी जेंसे कम्पोलैटिस क्लोरिडी ब्रेकोन क्राइसोपा सिरफिड मक्खी मकडिया आदि भी मुख्यतः प्रथम व द्वितीय अवस्था मे इल्लियों को नष्ट करती है इन मित्र कीटो का सरंक्षण एवं प्रयोग करना चाहिए ।

फेरोमोन ट्रैपः फेरोमेन ट्रेप (10–12 ट्रेप/हेक्टेयर) लगाकर नर कीटो को आकर्षित कर नष्ट करें जिससे इस कीट की आने वाली पीड़ी पर रोक लग सके ।

युक्लियर पोलीहैड्रोसिस विषाणु
इल्ली के आक्रमण होने पर एन पी व्ही (न्यूक्लियर पालीहेड्रोसिस वायरस) का 250 एल. ई. (इल्लियों के बराबर) का 500 लीटर पानी मे घोल बनाकर प्रति हेक्टयर के हिसाब से छिड़काव करे। प्रति छिड़काव यंत्र मे एक चाय का चम्मच टीपल या सेण्डोविट मिलाये जो वायरस को पत्तियों की सतह पर जमा रखने मे सहायक सिद्ध होता है। रोगग्रसित व मरी हुई सुंडियाँ पत्तियों व टहनियों पर लटकी हुई नजर आती हैं।
खेतो मे सतत निगरानी रखनी चाहिए एक मीटर लंबी कतार मे 2 या अधिक इलल्रियों के मिलने पर या फीरोमोन ट्रेप मे 4–5 प्रौढ कीट लगातार 4–5 दिन फसने से भी कीट का प्रकोप बढ़ने का आभास होता है। इस दशा मे इल्ली का प्रकोप अधिक दिखाई देता हैं तो इस दाा में रासायनिक कीटनाशियों का प्रयोग करना चाहिए।
इसके लिए इमामेक्टीन बेंजोएट 5 प्रतिशत एस.जी. 80 ग्राम प्रति एकड़ अथवा स्पाइनोसेड 45 प्रतिशत एस.सी. 70 मिली प्रति एकड़ की दर से 200–250 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। बड़ी इल्लियों की अधिकता होने पर किवनालफास 25 ई. सी. 1500 मि. ली. या इंडोक्साकार्ब 14. 5 एस. सी. 500 मि. ली. प्रति हेक्टयर के हिसाब से छिड़काव करे।

पाले से फसल का बचाव
पाला या तुषार का प्रभाव चने को बहुत अधिक नुकसान पहुंचाता है और इससे फसल को नुकसान भी बहुत होता है, पाले से बचाने के लिए एक लीटर गंधक या सल्फर का छिडकाव 1000 लीटर पानी मे मिलाकर करना चाहिए इसके अलावा अधिक ठंड पड़ने की दशा मे खेतो मे सिचाई करे एवं खेत के चारो तरफ धुआँ करना चाहिए ।

संपर्क सूत्र
कृषि विज्ञान केंद्र गोविंदनगर
भाऊसाहब भुस्कुटे स्मृति लोक न्यास गोविंदनगर
पलिया पिपरिया , तह – बनखेड़ी , जिला – होशंगाबाद म.प्र
Email - kvkgovindnagar2017@gmail.com,
Www.kvkhoshangabad.com

कृषि विज्ञान केंद्र गोविंदनगर
जिला – होशंगाबाद

चने की फसल मे रोग एवं कीट प्रबंधन

ब्रजेश कुमार नामदेव
(कीट वैज्ञानिक)
डॉ. संजीव कुमार गर्ग
(वरिष्ट वैज्ञानिक एवं प्रमुख)
राहुल माझी
(कार्यक्रम सहायक कम्प्यूटर)

भाऊसाहब भुस्कुटेस्मृति लोक न्यास गोविंदनगर

रोग प्रबंधन

कालर सड़न

लक्षण:

- पौध अवस्था मे पौधो का पीला होकर आसानी से उखड़ना
- जड़ मे सफेद फफूद का जाल दि खना एवं राई के आकार के स्क्लैरोशिया का दिखना

प्रसारण : भूमि मे स्क्लैरोशिया द्वारा

प्रबंधन :

- समय से बुवाई करे एवं रोग आने की दशा मे हल्की सिचाई करे।
- दीर्घ अवधि के लिए फसल चक्र अपनाए
- रोगी फसल अवशेषो को जला देना चाहिए
- बीजोपचार कार्बेण्डाजिम, थायरम 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज से उपचारित करना चाहिए।

उकठा या उगरा

लक्षण :

- उकठा के लक्षण बुआई के 30 दिन से तक दिखाई देते है
- खेत मे नमी रहते हुए भी पौधों का झुककर मुरझाना
- विभाजित जड़ में भूरी काली धारियों का दिखाई देना ।

फली लगने

प्रसारण : फसल अवशेष एवं भूमि मे उपस्थित कलेमाइडो स्पार द्वारा।

प्रबंधन:

- भूमि की गहरी जुताई मई – जून माह मे करे
- बुवाई 25 अक्टूबर से 10 नवम्बर तक कर लेना चाहिए
- दीर्घ अवधि के लिए फसल चक्र अपनाए
- अंतर्वर्तीय फसल चना, अलसी (4:1) के अनुपात मे लगाए
- बीजोपचार ट्राइकोडर्मा विरिडी (10 ग्राम) वीटावेक्स (2 ग्राम) से प्रति किलोग्राम बीज एवं राइजोवियम, पी एस बी कल्चर (10 ग्राम) प्रति किलोग्राम बीज, मोलिब्डेनम (5 ग्राम) प्रति किलोग्राम बीज से करना चाहिए।

रोगरोधी जातियाँ – जे. जी. 315, जे. जी. 218, जे. जी. 16, जे. जी. 322, जे. जी. 74, जे. जी. 130, जे. जी. 11, जे. जी. 63, जे. जी. 14, विशाल,

सूखा जड़ सड़न

लक्षण :

- फली बनने तथा दाना भरने की अवस्था मे पौधो का घास के रंग का हो जाना।
- जड़ों का काली होकर सड़ना एवं तोड़ने पर कड़क से टूटना ।

प्रबंधन :

- भूमि की गहरी जुताई मई जून माह मे करे
- दीर्घ अवधि के लिए फसल चक्र अपनाए
- समय से बुवाई करे एवं रोग आने की दशा मे हल्की सिचाई करे।

रोगरोधी जातियाँ – जे. जी. 11 जे. जी. 130 जे. जी. 16, जे . जी. 63

कीट प्रबंधन

दीमक: इसका प्रकोप क्षेत्र विशेष मे ही होता है–इसके नियंत्रण के लिए खेतो मे पाये जाने वाले दीमक के घर या बमीठा को नष्ट करे तथा बुवाई से पूर्व खेतो मे नीम की

खली अथवा क्लोरोपायरीफास कीटनाशक चूर्ण 30 किलोग्राम प्रति हेक्ट उपयोग करना चाहिए अथवा बुवाई से पहले बीजों को क्लोरोपायरीफास 8 मि ली कीटनाशी को 15 मि ली पानी मे घोलकर 1 किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करना चाहिए ।

कटुआ कीट : यह कीट मुख्यतः फसल को प्रारम्भिक अवस्था मे नुकसान पहुंचाता है, इल्लियाँ दिन के समय भूमि मे छुपी रहती है तथा रात मे निकलकर छोटे पौधो को सतह से काटकर गिरा देती है इसका नियंत्रण भी दीमक की तरह

बीज उपचार करके एवं बुवाई से पहले क्लोरोपायरीफास कीटनाशक चूर्ण 25–30 किलोग्राम प्रति हेक्ट की दर से भूमि मे मिलाना चाहिए। अधिक प्रकोप होने पर खेत मे शाम को जगह जगह कचरा का ढेर बनाकर रखे एवं सुबह ढेरो को पलटकर छुपी हुए इललियों को नष्ट करे। कटे पौधो के पास की मिट्टी हटा कर इललियों को बीन कर भी नष्ट किया जा सकता है ।

चने की इल्ली/फली भेदक

चने की फसल पर लगने वाले कीटों में फली भेदक सबसे खतरनाक कीट है। इस कीट क प्रकोप से चने की उत्पादकता को 20–30 प्रति ात की हानि होती है। अधिक प्रकोप की अवस्था में चने की 70–80 प्रति ात तक की क्षति होती है। इस कीट की मादा पत्तियों एवं शाखाओं पर भूरे हरे रंग के एक एक करके अंडे देती है। छोटी इल्लियां पीली भूरे रंग की होती है,

जो पत्तियों के पर्णहरिम को खाती है एवं बड़ी इल्लियाँ फूलो को खाती है तथा फली मे छेद कर के अंदर विकसित हो रहे दानो को खाती है। इल्ली और धीरे–धीरे बड़ी होती जाती है। जैसे–जैसे सूड़ी बड़ी होती जाती है, यह फली में छेद करके अपना मुंह अंदर डालकर पूरा दाना खा लेती है। एक इल्ली करीब 30–40 घेटिया या फली को नुकसान पहुचाती है ।